दिनेश रविकर

जन्म तिथि - 15.08.1960
जन्म स्थान - पटरंगा मण्डी (अयोध्या)
पिता : स्व लल्लूराम गुप्ता
माता : स्व विद्योत्मा
फोन : 9793734837

कविता कर-कर कवि करे, आध्यात्मिक उत्थान।
सामाजिक नवचेतना, व्यापक शुभ अभियान।
व्यापक शुभ अभियान, राष्ट्र-हित की ले मंशा।
समुचित तीखा व्यंग्य, सारगर्भित अनुशंसा।
राष्ट्र-धर्म रक्षार्थ, कमर कसकर हर कविवर ।
करें लोक-कल्याण, हमेशा कविता कर कर ।।

****

इंसानी छलछंद को, करते अक्सर मंद।
हास्य-व्यंग्य सुंदर विधा, रचे प्रभावी छंद।
रचे प्रभावी छंद, खोट पर चोट करें हैं।
प्रवचन कीर्तन सूक्ति, भजन संदेश भरें हैं।
सुने-गुने धर-ध्यान, नहीं है रविकर सानी।
किन्तु दृष्टिगत भेद, दिखे फितरत इंसानी।।

****

बना चपाती रच रही, गृहणी छंद महान।
बैठी सब्जी काटती, बड़े-बड़ों के कान।
बड़े बड़ों के कान, नई चीजें नित दीखें।
तरह तरह के छौंक, लगा के कविता सीखें।
उच्चकोटि के छंद, आज माँ - बहन सुनाती।
धन्य फेसबुक धन्य, पेट भर बना चपाती।।

****

पानी-पानी हिम करे, मिलकर मेरा मीत।
दिया कोहरा को हरा, छू-मंतर हो शीत।।
छू-मंतर हो शीत, धुँआसा सकल हटाता।
किन्तु सहेली देख, धुँआ सा मुँह बन जाता।
बना बहाना किन्तु, दहकती रही जवानी।
बीत गये नौ मास, मिला चुल्लू भर पानी।।

****

सारे ही दुख-दर्द के, जड़ में तेरी याद ।
मर-मर हम मरहम मलें, फिर भी बने मवाद।
फिर भी बने मवाद, घाव में अक्श तुम्हारा ।
उस झुरमुट से किंतु, देख तू टूटा तारा ।
पहला-पहला प्यार, प्रिया अनवरत पुकारे ।
तू भी कर ले याद, मिटें रविकर दुख सारे ।।

****

पा ले जब सन्तोष धन, टले मनुज व्यवधान।
अधिक अपेक्षायें नहीं, पाले वृद्ध सुजान।
पाले वृद्ध सुजान, पोतियाँ-पोते भाये।
नहीं अड़ाये टाँग, सकल-व्यापार थमाये।
सुत माँगे यदि राय, राय में अनुभव डाले।
प्रभु का करता ध्यान, परम पद निश्चय पाले।।

****

अपने-अपने ढंग हैं, अपना एक हिसाब।
चला इसी से जिंदगी, नियमित कमा सबाब ।।
नियमित कमा सबाब, दाब मत तू इच्छाएँ।
यही हिसाब-किताब, बड़े-बूढ़े समझाएँ।
किन्तु किताबी कीट, कहीं ना लगें पनपने।
रविकर माथा पीट, मार्ग भूलें यदि अपने ।।

****

सपने एवं जिंदगी, मोल-भाव में व्यस्त।
टके-टके पर टकटकी, मानव माल-परस्त।।
मानव माल-परस्त, मगर मन में अति-दुविधा।
दो हर सपना बेंच, अन्यथा बढ़े असुविधा।
रही जिंदगी शेष, साथ देंगे तब अपने।
लेना मित्र खरीद, दुबारा सारे सपने ।।

****

बेला पापड़ उम्रभर, अलबेला उत्साह।
जिया सदा परिवार हित, खुद से बेपरवाह।
खुद से बेपरवाह, स्वास्थ्य चौपट हो जाता।
आये अब प्रभु याद, पिता गुरु रविकर माता।
तैयारी पुरजोर, करूँ सब छोड़ झमेला।
अतिशय हृदय प्रसन्न, मिलन की आई बेला।।

****

मोती को यदि बींधना, करो बीच में छेद।
माला बने न छेद बिन, बने न नर बिन वेद।।
बने न नर बिन वेद, भावना-शून्य न होना।
झिड़की लोरी लाड़, सुबकना हँसना रोना।
रविकर बाल-विकास, डोर मोतियाँ पिरोती।
नयन नहीं ये सीप, अश्रु बन जाता मोती।।

****